संस्कृत

● **प्रथमः पाठः**

वन्दना

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।।१।।

असतो मा सद् गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर् मामृतं गमय।।२।।

यतो यतः समीहसे,
ततो नोऽभयं कुरु,
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो-
ऽभयं नः पशुभ्यः ।।३।।

नमो ब्रह्मणे त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु तद् वक्तारमवतु।
अवतु माम्, अवतु वक्तारम्।।४।।

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं,
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यम् ऋतसत्यनेत्रं,
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः।।५।।

अभ्यास प्रश्न

● **लघु उत्तरीय प्रश्न**

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

१. भक्तस्य कः स्वरूपः अस्ति?

२. भक्तः कां प्रतिज्ञां करोति?

३. भक्तः ईश्वरं किं याचते?
४. भक्तः कुत्र गन्तुम् इच्छति?
५. ईश्वरस्य के नेत्रे स्तः?

● अनुवादात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–**
(अ) तेजोऽसि तेजो ..... मयि धेहि।
(ब) असतो मा ..... गमय।
(स) यतो यतः ..... नः पशुभ्यः।
(द) सत्यव्रतं ..... शरणं प्रपन्नाः।

२. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**
(अ) ब्रह्म को नमस्कार है।
(ब) तुम तेज स्वरूप हो।
(स) सत्य बोलो।
(द) मेरी रक्षा करो।

● व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम बताइए–**
वीर्यमसि, तेजोऽसि, मामृतं, त्वमेव, सत्यात्मकं, शत्रः।

२. **निम्नलिखित धातु-रूपों में लकार, वचन और पुरुष लिखिए–**
वदिष्यामि, कुरु, अवतु, असि।

● आन्तरिक मूल्यांकन

आप जिस देवता की स्तुति करके कार्यारम्भ करते हैं, उससे सम्बन्धित मन्त्रों की एक सूची बनाइये।

शब्दार्थ

मयि = मुझ में। **धेहि** = धारण करो। **ओजः** = तेज, प्राण-बल, सामर्थ्य। **वीर्यम्** = बल, शक्ति, पराक्रम। **तेज** = आभा। **असतो** = असत्य से (अस्थिरता, बुराई से)। **मा** = मुझको। **सद्** = सत्य (स्थिरता, भलाई)। **गमय** = ले चलो (ले जाओ)। **तमसः** = अन्धकार से। **ज्योतिः** = प्रकाश। **मृत्योः** = मृत्यु से। **अमृतम्** = अमरता (की ओर)। **यतोयतः** = जिस-जिससे। **समीहसे** = चाहते हो। **ततः** = उससे। **नः** = हमें। **अभयं** = निर्भय। **शम्** = कल्याण। **ब्रह्मणे** = ब्रह्म को। **त्वाम्** = तुमको, आपको। **ऋतम्** = यथास्थिति। **माम्** = मुझको (मेरी)। **अवतु** = रक्षा करें। **वक्तारम्** = वक्ता को (की)। **सत्यव्रतम्** = सत्य का पालन करनेवाले। **सत्यपरम्** = सत्यमार्ग पर तत्पर रहनेवाले। **त्रिसत्यम्** = त्रिकाल सत्य। **त्रिकाल** = (भूत, भविष्य एवं वर्तमान; पृथ्वी, आकाशादि पञ्चभूत)। **सत्यस्य सत्यं** = पंचभूतों के नष्ट होने पर भी सत्य (स्थित)। **नेत्रम्** = प्रवर्तक। **सत्यपरम्** = सत्य ही श्रेष्ठ साधन है जिसका। **सत्** = पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश। **शरणं** = शरण में। **प्रपन्नाः** = प्राप्त हुए हैं।

●